शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

● वर्ष 1 ● अंक 2 ● उदयपुर, सोमवार 1 फरवरी 2016 ● पेज 8 ● मूल्य 5 रू

इस बार प्रदेश स्तरीय समारोह बीकानेर में हुआ

जयपुर, 26 जनवरी। प्रदेश भर में मंगलवार को 67वां गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर राज्य स्तरीय समारोह बीकानेर में आयोजित किया गया जहां राज्यपाल कल्याण सिंह ने ध्वजारोहण किया। वहीं अन्य ज़िला मुख्यालयों पर मंत्रीपरिषद् के सदस्यों, संभागीय आयुक्तों एवं जिला कलेक्टरों ने झण्डारोहण किया। प्रदेश भर में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में सभी जिला मुख्यालयों पर मुख्य अतिथियों द्वारा ध्वजारोहण करने के बाद मार्च पास्ट की सलामी ली एवं परेड का निरीक्षण किया। इस दौरान स्कूली बच्चों द्वारा मनमोहक व्यायाम प्रदर्शन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम और झांकिया भी प्रदर्शित की गयी। सभी जिलों में उत्कृष्ट कार्यों एवं सराहनीय सेवाओं के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्मानित भी किया गया। समारोह के दौरान राज्यपाल के सन्देश का वाचन भी किया गया।

उदयपुर संभाग मुख्यालय पर गणतंत्र दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। उदयपुर के महाराणा भूपाल स्टेडियम पर आयोजित मुख्य समारोह में मुख्य अतिथि गृह मंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, परेड का निरीक्षण किया और मार्च पास्ट की सलामी ली।

इन दिनों

कांटों भरा ताज

उदयपुर शहर–देहात भाजपा में विभिन्न समूहों के बीच वर्चस्व की जंग के चलते उठापटक यूं तो चलती रही है लेकिन देहात जिलाध्यक्ष पद पर गुणवन्तसिंह झाला की ताजपोशी के साथ हलचल फिर तेज हुई है। पार्टी में बदले अन्दरुनी रंग के बीच झाला ने पद संभाला तो कई तरह की बातें सामने आई। पदभार ग्रहण के लिए पार्टी कार्यालय में आयोजित समारोह में उपेक्षाओं–अपेक्षाओं की बातों के बीच किसी ने उम्मीदें जताई तो किसी ने सम्भावनाएं–आशंकाएं। भाजपा में अटल–अटूट बनी आपसी खींचतान के पार्श्व में इस ताजा रंग की यहां विशेष प्रस्तुति का प्रयास किया जा रहा है। हमारा मकसद पाठकों के समक्ष घटनाक्रम का रोचक अन्दाज में विश्लेषण रखना है, किसी को ठेस पहुंचाना नहीं।

रंग-01: कटारिया विरोधी गुट के लिए यह कोरा पद नहीं बल्कि जीवनदायिनी बूटी है, जिसे पीकर अब इस गुट के सिपहसालार कटारिया से सीधे आंख मिला सकेंगे। अब उन्हें यहां-वहां ठिकाना बनाने की जरुरत नहीं पड़ेगी बल्कि अधिकारपूर्वक पार्टी कार्यालय जाएंगे। बैठकों का न्यौता पाने को तरसने वाले अब खुद बैठकें बुलाएंगे। पार्टी के कार्यक्रमों में जाकर भी अनुपस्थित से दिखने वाले अब बाकायदा उपस्थिति रजिस्टर में दस्तखत करेंगे।

रंग-02: देहात में अब कटारिया समर्थक गुट के लोगों की स्थिति वैसी होगी, जैसी अब तक उनके विरोधियों की थी। अब वे देहात की बैठकों में जाने से कतराएंगे। पहले बैठकों में नहीं बुलाने के इल्जाम झेलते थे, अब खुद ऐसे आरोप लगाएंगे। सक्रिय कार्यकर्ताओं की उपेक्षा होने, पार्टी में कोई काम नहीं होने, एकतरफा फैसले लिए जाने जैसे आरोप भी गढ़ेंगे–मढ़ेंगे।

रंग-03: द्विअर्थी शब्दों का प्रयोग बढ़ेगा। जैसे, कटारिया समर्थक कुछ नेताओं ने पदभार ग्रहण समारोह में कह भी दिया–'यह कांटों भरा ताज है'। कल तक खुद इस पद पर अपने सिपहसालार को बैठाने में दम खपा रहे नेताओं ने आज कांटों भरा ताज बताकर जता दिया कि वे चैन से नहीं बैठने देंगे। कमियां निकालेंगे, आरोप लगाएंगे, टांग खींचेंगे। जैसे कांग्रेस में आपस में खींची जा रही है।

रंग-04: स्थिति थोड़ी बदल जाएगी लेकिन खींचतान वही रहेगी। जनता के लिए न सही, शहर और देहात में एक–दूसरे को चिढ़ाने के लिए ही सही, पार्टी की कार्यकारिणियां बढ़–चढ़ कर कार्यक्रम करेंगी। एक–दूसरे से बड़ा आयोजन करने, ज्यादा भीड़ जुटाने के प्रयास होंगे।

रंग-05: जनता कल जिस हाल पर थी, कल भी उसी हाल पर रहेगी। वह देख रही थी, देख रही है और उसे अभी देखते ही रहना होगा क्योंकि, अभी केवल भाजपा देहात की कार्यकारिणी बनी है। शहर की बाकी है। कांग्रेस में तो अभी पूरा का पूरा गठन ही बाकी है। यूआईटी चेयरमैन सहित कुछ अन्य अहम पदों पर नियुक्तियां भी होनी हैं। **–केकूकी**

सीएम राजे द्वारा स्वास्थ्य केंद्र लोकार्पित

जयपुर। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने बीकानेर जिले की नोखा तहसील के गांव काकड़ा में श्री रामचन्द्र नरसिंहदास लाहोटी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि अकेली सरकार सब कुछ नहीं कर सकती। दानदाताओं एवं ट्रस्टों को आगे आना होगा, ताकि सभी मिलकर इस दिशा में कार्य कर सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गांव काकड़ा सौभाग्यशाली है कि ऐसा दानदाता परिवार मिला जिसने जमीन तो दी ही, साथ में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बनाकर भी दिया है। इस कार्य से प्रेरणा लेकर दूसरे औद्योगिक घराने एवं ट्रस्ट भी स्वास्थ्य सेवाओं को आमजन तक पहुंचाने में सहयोग करें। सभी के सहयोग एवं प्रयासों से राजस्थान विकास की ऊंचाइयों को छू सकेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा– हमारी सरकार जब बनी थी, तब प्रदेश में करीब 9 हजार डॉक्टरों की कमी थी। हमारा प्रयास है कि एलोपैथी के साथ आयुर्वेद एवं होम्योपैथी से जुड़े चिकित्सकों का सहयोग लेकर छोटे कस्बों एवं गावों में बनी पीएचसी तक डॉक्टरों की सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकें। आरोग्य राजस्थान अभियान के माध्यम से प्रदेश में घर–घर जाकर लोगों का सर्वे कर ई–हैल्थ कार्ड बनाए जा रहे हैं जिससे कि उनके स्वास्थ्य से संबंधित समस्त जानकारी एक जगह उपलब्ध हो और इलाज में आसानी हो सके।

vedanta | HINDUSTAN ZINC

आप सभी को गणतंत्र दिवस 2016 की हार्दिक शुभकामनाएं

Sakhi सखी

ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं की सफलता की पहचान

हिन्दुस्तान जिंक की पहल

हिन्दुस्तान जिंक का 'सखी' अभियान - राजस्थान की ग्रामीण महिलाओं में ला रहा है सामाजिक व आर्थिक सशक्तिकरण

स्मृतियों के शिखर (2) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जीवन-साहित्य के मणि 'मधुकर'

वे मधुकर तो थे ही पर मणि मधुकर थे या मधुकर मणि, यह विश्लेषण अभी शेष है।

मणि मधुकर उन रचनाकारों में से थे जिन्होंने कम समय में बड़ी ख्याति अर्जित की। वे बहुमुखी प्रतिभा लिए थे। कविता, नाटक और पत्रकारिता के क्षेत्र में वे बड़े लेखक के रूप में चर्चित रहे। नाटक लेखन एवं मंचन के साथ-साथ वे नाट्य दिग्दर्शन में भी माहिर थे। लोकनाट्यों के कथन, मंचन की दृष्टि से भी उनका अध्ययन पैना था। वे कम उम्र में चले गये पर छोटी उम्र में भी जो कार्य उन्होंने किया, वह बड़ी उम्रवाले भी बमुश्किल ही कर पाते हैं।

उनसे बहुत बार मिलना तो नहीं हुआ किन्तु जितना मिलना हुआ वही गहन गंभीर बन गया। साहित्य अकादमी के समारोह संगोष्ठी में उनसे भेंट हुई। एकाधबार संगीत नाटक अकादमी के मंच पर भी मिलना हुआ। उनसे पत्राचार भी होता रहा। एकबार मेरे मित्र डॉ. विश्वंभर व्यास ने कुछ मित्रों को मेरे किसी अभिनंदन के लिए लिखा। मुझे ठीक से मालूम नहीं, वह किस तरह का अभिनंदन था, मैंने बाद में मना ही कर दिया था किन्तु उन्होंने मणि मधुकर को लिखा कि वे अपनी सहमति भेजें। उत्तर में मणि ने उनको 16 जनवरी 1976 को लिखा- ''डॉ. महेन्द्र भानावत मेरे मित्र हैं और अपने क्षेत्र के अद्‌भुत निष्ठावान विद्वान एवं अन्वेषी हैं। उनके सम्मान में जो कुछ भी किया जाएगा, उसमें आप मेरी स्वीकृति समझें।''

उदयपुर विश्वविद्यालय में पीएच.डी. के लिए शोधकार्य प्रारंभ हुआ तब मैंने राजस्थान के लोकनाट्य को अपना विषय बनाया। मैंने लगभग हर अंचल का भ्रमण कर यह कार्य किया। ऐसा अन्य प्रांतों में भी कहीं अध्ययन नहीं हुआ था। भीलों के गवरी नाट्य पर मैंने विशेष अध्ययन किया था और पहले बैच में ही मुझे डाक्टरेट की उपाधि मिली। यह वर्ष 1967 का था।

बाद में मणि मधुकर ने एक टिप्पणी द्वारा राजस्थान में सुरध्याणी ख्याल के प्रचलन की सूचना दी। मेरी जानकारी में इस शैली के ख्याल नहीं आ पाये। मुझे अन्य लोगों ने भी इन ख्यालों के बारे में विशेष जानकारी के लिए लिखा। मैं स्वयं भी चाहता था कि पूरी सूचनाएं पाकर मैं सुरध्याणी ख्यालों की जानकारी के लिए संबंधित कलाकारों से मिलूं। कलामंडल में इन ख्यालों के अच्छे दल को बुलाकर प्रदर्शन करवाने के लिए भी मुझे देवीलाल सामरजी ने कहा था फलस्वरूप मैंने मणि मधुकर को ही पत्र लिखा कि वे इस ख्याल-विधा की पुख्ता जानकारी भिजायें ताकि उस पर गहन गवेषणा की जा सके। मणि ने कोई उत्तर नहीं भेजा और आज तक भी मुझे सुरध्याणी ख्याल के बारे में कहीं से कोई जानकारी उपलबध नहीं हो पाई। लगा जैसे कोई स्वप्न ही आया और फटाफट कोई बात कहकर छूमंतर हो गया।

मैं मित्रों को हर दीवाली पर शुभकामना स्वरूप कोई न कोई काव्य-पंक्तियां लिखकर भेजता। वर्ष 1980 की दीवाली पर मैंने अपनी काव्य-पुस्तक 'कोई-कोई औरत' प्रकाशित कर कई मित्रों को भेजी। इसकी भूमिका डॉ. प्रभाकर माचवे ने लिखी। बाद मे यह पुस्तक राजस्थान ग्रेजुएट्स सोसायटी मुम्बई से पुरस्कृत भी हुई। मणि मधुकर को भी मैंने यह पुस्तक भेजी। उसकी प्राप्ति पर उन्होंने मुझे 12 नवम्बर 1980 को दिल्ली से अन्तर्देशीय पत्र में लिखा।

प्रिय भाई,

दीपोत्सव पर आपका बहुत सुन्दर उपहार मिला कृतज्ञ हूं। आपके कवि से मेरा अपरिचय नहीं है किन्तु उसके गहरे और गंभीर व्यक्तित्व को एक साथ पूर्ण रूप में जानने का अवसर मुझे पहली बार मिला है। कई कविताओं ने मन को एक सर्जनात्मक उत्तेजना दी और आपके तलस्पर्शी अनुभवों ने मेरे भीतर की दुनिया में नया रचाव पैदा किया। आपकी रचना-शक्ति की जड़ें लोकजीवन के सांस्कृतिक धरातल में पैठती है और यहीं उनसे एक अनूठा रसबोध उपलब्ध होता है। अपने कृतित्व के जरिये आपने मुझे याद किया, सचमुच उपकृत महसूस कर रहा हूं। आपकी 'ऊंचाइयों' के लिए मेरी आत्मीय शुभकामनाएं।

स्नेहपूर्वक

मणि मधुकर

अपने समय में अपनी रचनाओं द्वारा मणि मधुकर सदैव चर्चा में रहे। चर्चा में बने रहने के लिए रचनाकार को सदैव लीक से हटकर सृजन करना होता है। अपने नाटकों में उन्होंने वह कर दिखाया। उनके माध्यम से उन्होंने नई भाषा, नया शिल्प और नये मुहावरे दिये। उनमें नित कुछ नया, अजूबा करने, लिखने, सोचने तथा समझने की दृष्टि-ऊर्जा थी जिससे वे हर समय नई हलचल देते और हलचल में बने रहते। बड़े पत्रों और बड़ी जमात के साहित्यकारों से उनकी मैत्री रही इसलिए वे राजस्थान से उठकर एक बड़े भारतीय फलक को अपना 'निज' दे सके। इसके लिए उन्हें बड़ी दौड़धूप, बड़ा संघर्ष और बड़ी ऊहापोह से गुजरना पड़ा। वे इसी कारण विवादित भी रहे लेकिन वे अपनी हिम्मत में सदैव उत्साहित रहे।

मणि मधुकर का मेरे पास लिखा अंतिम पत्र 9 दिसम्बर 1981 का है जिसे उन्होंने 'सेतुमंच' से लिखा। सेतुमंच नाम से उन्होंने भारतीय संस्कृति, साहित्य, प्रेस, संगीत, रंगमंच, नृत्य, सिनेमा एवं ललित कलाओं का विश्व प्रतिष्ठान कायम किया था। यह पत्र लोककला मंडल के संस्थापक देवीलाल सामर के निधन पर लिखा था।

7/2 राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली से 9 दिसम्बर 1981 को लिखे गये इस पत्र में उन्होंने न केवल अपनी शोकाकुल परिवेदना ही व्यक्त की अपितु सामरजी की देन को भी बड़ी उदात्त ऊंचाई के भाव से रेखांकित किया। इस पत्र में सामरजी से अपनी आखिरी भेंट का उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा- ''हाल ही में मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिला। वे इतने स्वस्थ, प्रसन्नचित्त और जीवन के सौंदर्य से लबालब नजर आ रहे थे कि उनसे बात करते हुए मन अद्‌भुत आल्हाद से भर उठा। उनका स्वर युवकोचित उत्साह से पूर्ण था और चेहरे की भंगिमाओं में एक ओज, एक प्रमोद और एक अनहद नाद की अन्तरंग छवि का प्रतिबिम्ब। मैंने उनसे कहा भी कि आपको इस तरह तरो-ताजा देखकर सचमुच बड़ा अच्छा लग रहा है। वे हंसे, फिर मेरे कंधे पर हाथ रख दिया, बोले- जब तक काम करूंगा, ऐसा ही रहूंगा, आप निश्चत रहें।

आगे उन्होंने लिखा- सामरजी का न रहना लोकधर्मी कालाओं के सर्जनात्मक पक्ष की कितनी गहरी क्षति है, इसे सभी हतप्रभ से होकर महसूस करेंगे। उनकी जिन्दगी रंगकर्म के लिए पूरी तरह समर्पित थी। उनकी उपलब्धियों की गणना करना एक विराट पर्वत को नापना है। राजस्थानी संस्कृति और लोककलाओं की प्रतिष्ठा को उन्होंने विश्व स्तर तक पहुंचाया तथा स्वयं हमेशा नेपथ्य में सिर झुकाये खड़े रहे। मैंने कभी भी उन्हें गर्वोक्ति की मुद्रा में नहीं देखा।''

कहना नहीं होगा, मणि मधुकर जब तक जीये, साहित्य में, पत्रकारिता में 'मणि' ही बने रहे। वे मधुकर तो थे ही पर मणि मधुकर थे या मधुकर मणि, यह विश्लेषण अभी शेष है।

लोक और शास्त्र की समझ के लिए आंख खोल देने वाली पुस्तक

यह पुस्तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से हिंदी विभाग, श्री बलदेव पीजी कॉलेज, बड़ा गांव वाराणसी और विद्याश्री न्यास के संयुक्त उपक्रम के रूप में, भारत विद्या के पंडित और इसके साथ ही लोकजीवन और संस्कार में गहराई से रमे विद्यानिवास मिश्र के जन्म दिवस (14 जनवरी) पर आयोजित लोक और शास्त्र: अन्वय और समन्वय विषय पर केंद्रित तीन दिवसीय (13 से 15 जनवरी, 2003) राष्ट्रीय संगोष्ठी और भारतीय लेखक शिविर में प्रस्तुत व्याख्यानों और आलेखों का एक चयन है।

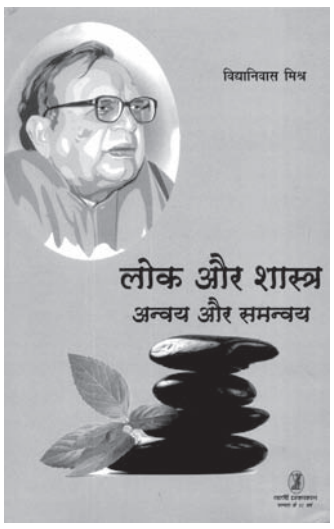

संपादकीय में लिखी यह टीप स्पष्टत: विद्यानिवास मिश्र की स्मृति का सांगोपांग दरसाव है। यह पुस्तक लोक और शास्त्र को समझने में विद्वानों के विचार वैविध्य का सही, सटीक, स्पष्ट और प्रामाणिक पक्ष प्रस्तुत करती है। पुस्तक के प्रारंभ में लोक और शास्त्र लेख में मिश्रजी लोक और शास्त्र के समन्वय को समझने की पुष्ट भूमिका देते लिखते हैं- परंपरा का आदि स्त्रोत ढूंढना बड़ा कठिन है। बहुत से लोकाचार, लोकानुष्ठान और उसके वाक्-अंगभूत लोकगीत और लोकाख्यान कहीं-कहीं तो वैदिक मंत्रों की गूंज जान पड़ते हैं। कहीं-कहीं बहुत से तांत्रिक अनुष्ठानों की गूंज वहां मिलती है। कौन पहले है, कौन बाद में, यह निर्णय करना कठिन है परन्तु इस निर्णय की अपेक्षा ही नहीं रखती परंपरा। परंपरा तो संश्लिष्ट है। जिस बिंदु पर है उस बिंदु पर सम्पूर्ण है। उसमें कितना प्रतिशत वैदिक है, कितना तांत्रिक, कितना जनजातीय, यह विश्लेषण अनावश्यक है क्योंकि परंपरा इतिहास से या तिथि क्रम से प्रमाणित नहीं होती। वह प्रमाणित होती है वर्तमानता और सफलता से। (पृ. 16)

इसी क्रम में उन्होंने लिखा- कुम्हार हजारों वर्षों से वही घोड़ा, वही घुड़सवार, वही हाथी बना रहा है जो उसके दादा-परदादा बनाते आये हैं पर कोई अच्छी तरह बनाया घोड़ा-हाथी दूसरे की नकल नहीं होता। हर एक की एक पहचान अलग है। वही उस कलाकार का वैशिष्ट्य है। (पृ. 19)

यही नहीं, पुस्तक का अंतिम लेख भी मिश्रजी का लिखा ही है जिसका शीर्षक है- लोकवार्ता और लोकसाहित्य : बनावट और बुनावट। मिश्रजी इसमें भी स्पष्ट करते हैं- लोकसाहित्य की रचना पूर्व राग या पूर्व द्वेष द्वारा नहीं होती इसीलिए समस्त लोक की प्रत्याशाओं का ठीक-ठीक आकलन करने में वह समर्थ होता है (पृ. 240) और स्पष्ट कहा है- तुलसीदास जैसे कवि ने लोक प्रचलित धुनों का आसरा लिया है। लोकभूमि पर पुष्पवाटिका प्रसंग की रचना की। इसी प्रकार तुलसीदास के नाम से हजारों मंगल गीत लोक में प्रचलित हो गये। (पृ. 234)

पुस्तक में 22 और लेख संग्रहीत हैं जो विविध विषयों पर लोक और शास्त्र के अध्ययन की पुख्ता सामग्री प्रस्तुत करते हैं। इनमें कपिल तिवारी, डॉ. महेन्द्र भानावत, मालती शर्मा, बसंत निरगुणे, विद्याविन्दुसिंह वे नाम हैं जो विगत कई वर्षों से लोक और शास्त्र के वैचारिक मंथन से सीधे जुड़े हुए हैं। लोक और शास्त्र के बीच हल्लागुल्ला करने वालों के लिए यह पुस्तक आंख खोलने वाली है।

वाणी प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली से इसका प्रकाशन 2015 में हुआ। कुल 247 पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य 250 रूपये है। ऐसी उपयोगी और मूल्यवान पुस्तक के लिए कई प्रकार के प्रश्न खड़े करता है और सोच के लिए मजबूर कर देता है यह कथन कि आखिर पुस्तकों का प्रकाशन किस लिए होता है जिन पर लिखा रहता है- इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

-लगछू

डॉ. मालती शर्मा को देवपुत्र गौरव सम्मान

पिछले दिनों इंदौर में प्रतिष्ठित बालसाहित्य लेखिका पूना की डॉ. मालती शर्मा को देवपुत्र गौरव सम्मान प्रदान किया गया। ख्यात लेखिका गोवा की राज्यपाल डॉ. मृदुला सिन्हा ने कहा कि बच्चों को जीवन संस्कार एवं शिक्षा देने के लिए प्रत्येक घर में दादा-दादी का होना जरूरी है। उनके बिना परिवार अधूरा है।

सम्मान स्वरूप शॉल, श्रीफल एवं पैंतीस हजार की राशि प्राप्त डॉ. मालती ने सम्मान प्रदाता बालसाहित्य शोधकेन्द्र तथा देवपुत्र पत्रिका के संपादक कृष्णकुमार अष्ठाना की पिछले 30-35 वर्षों की साधनामूलक देन को नमन करते हुए कहा कि उनके प्रयासों से बालसाहित्य की लोकप्रियता में ही वृद्धि नहीं हुई, देवपुत्र नामक मासिक बाल पत्रिका भी सर्वाधिक एक लाख की ग्राहक संख्या वाली पत्रिका बन गई।

इस अवसर पर डॉ. सिन्हा ने मालती शर्मा के सद्य प्रकाशित 'परम्परा का लोक' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया और कहा कि हमारा देश लोकपरंपरा का ही देश है। इस परंपरा और लोक को हर दृष्टि से हमें बचाये रखना है।

ज्योतिर्मय गणतंत्र हमारा, है दुनिया में सबसे न्यारा

उदयपुर संभाग मुख्यालय पर गृहमंत्री कटारिया ने फहराया तिरंगा

उदयपुर। उदयपुर के महाराणा भूपाल स्टेडियम पर मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों एवं उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 72 जनों को प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

जिला कलक्टर रोहित गुप्ता को नरेगा कार्यों के लिए राष्ट्रीय सम्मान और नगर विकास प्रन्यास के सचिव रामनिवास मेहता को बीकानेर में हुए राज्यस्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में सम्मानित होने पर बधाई दी। गृहमंत्री ने उदयपुर को स्मार्ट सिटी बनाने के लिए नागरिकों से हरसंभव आत्मीय भागीदारी का आह्वान किया। गृहमंत्री ने उदयपुर के समग्र विकास का जिक्र किया और बताया कि उदयपुर में बर्ड पार्क का भूमि पूजन फरवरी में होगा। उन्होंने खेल गांव में 14 करोड़ के इण्डोर स्टेडियम की चर्चा की और बताया कि देबारी-काया बाय पास का काम दो माह मे शुरू होगा।

गृहमंत्री कटारिया ने देश को ऊँचाई पर ले जाने के लिए ईमानदारी और निष्ठा के साथ काम करने तथा अभावों में जी रहे करोड़ों लोगों को बराबरी पर लाने, स्वच्छ भारत मिशन के संकल्पों को साकार करने का आह्वान किया और बताया कि देवास-द्वितीय की पूर्णता से उदयपुर की झीलें हमेशा लबालब भरी रहेंगी। इस मौके पर 15 विभागों एवं संस्थाओं द्वारा विकासपरक झांकियां निकाली गईं।

ब्रिगेडियर पाटील सम्मानित

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय की ओर से ब्रिगेडियर एस.एस. पाटील

को उनके द्वारा राष्ट्र निर्माण एवं देश की सुरक्षा में किये गये उल्लेखनीय कार्य के लिए 'शौर्य शिरोमणि अवार्ड' से सम्मानित किया गया। कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, रजिस्ट्रार प्रो. सीपी अग्रवाल एवं शायर डॉ. इकबाल सागर ने उन्हें उपणा, शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

पाटील ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं को अधिक से अधिक योगदान देना चाहिए। कई विश्वविद्यालयों में बालिकाएं उच्च शिक्षा में आगे बढ़ रही हैं जो पूरे देश के लिए गौरव का विषय है। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे शिक्षा को समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए समर्पित करें और ग्रामीण क्षेत्र में जाकर साक्षरता, स्वास्थ्य तथा जनहित जैसे महत्वपूर्ण कार्य करें। इस अवसर पर प्रसिद्ध शायर डॉ. इकबाल सागर भी कुलपति सारंगदेवोत द्वारा 'कवि शिरोमणि' अवार्ड से नवाजे गये।

हिन्दुस्तान ज़िंक में मनाया गणतंत्र दिवस

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िंक के प्रधान कार्यालय पर मुख्य प्रचालन अधिकारी लक्ष्मण सिंह शेखावत ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। शेखावत ने कहा कि भारत आज लोकतंत्र की मशाल जलाते हुए दुनिया में आशा-

उमंग, शांति के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। कई उतार-चढ़ाव तथा आपातकाल के बावजूद देश की सार्वभौमिकता बरकरार है। हिन्दुस्तान ज़िंक अपने व्यापार के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक कल्याण, ग्रामीण उत्थान, पर्यावरण, संरक्षण एवं सुरक्षा के प्रति सदैव से कटिबद्ध रहता आया है। इसके उत्कर्ष और उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए सभी कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर केन्द्रीय कार्यालय श्रमिक संघ के कार्यकारी अध्यक्ष एम.के. दीक्षित ने प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। जिंक परिवार के बच्चों ने कविता, संगीत एवं देश-भक्ति गीतों की प्रस्तुतियां दी।

नारायण सेवा में गणतंत्र दिवस मनाया

नारायण सेवा संस्थान में गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। डॉ. कैलाश मानव ने मानव मंदिर में, अंकुर कॉम्पलैक्स में डॉ. ए.एस. चुंडावत ने, सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के अपना घर में प्रशांत अग्रवाल ने तथा सेवा महातीर्थ में रतन सिंह ने तिरंगा फहराया। इस अवसर पर नि:शक्त, प्रज्ञाचक्षु एवं मूक बधिर विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक एवं जिम्नास्टिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दीं।

भटनागर व मोहसिन को जिला स्तरीय सम्मान

पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर न्यूज 91 के चीफ वीडियो जर्नलिस्ट रमेशकुमार भटनागर व दैनिक जागरूक टाइम्स के मोहसिन को जिला स्तरीय सम्मान से नवाजा गया है।

भटनागर सन् 1981 से पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत हैं। भटनागर ने अपने कार्य की शुरूआत संवाद एजेंसी यूएनआई से की। फिर राजस्थान पत्रिका में अपनी सेवाएं दी। वे राष्ट्रीय चैनल एटूजेड, समाचार प्लस में भी काम कर चुके हैं।

पवन कौशिक 'उदयपुर रत्न अवार्ड' से सम्मानित

लेकसिटी प्रेस क्लब ने पवन कौशिक को 'उदयपुर रत्न अवार्ड' से सम्मानित किया है। हिन्दुस्तान जिंक के हेड कार्पोरेट (कम्युनिकेशन) श्री कौशिक का 'सखी' अभियान से ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं को आत्मविश्वासी एवं सशक्त बनाने एवं 'खुशी' अभियान से भारत में वंचित बच्चों के प्रति आम जनता में जागरूकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है।

शब्द रंजन
उदयपुर, सोमवार 1 फरवरी 2016

राष्ट्रीय पुरस्कारों की घटती साख

गणतंत्र दिवस पर राष्ट्र द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में वैशिष्ट्य प्राप्त व्यक्तियों को पद्म पुरस्कार देने की परंपरा पचास वर्ष पुरानी है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का यह सोच था कि साहित्य, अर्थशास्त्र तथा विज्ञान के क्षेत्र में महारत प्राप्त व्यक्तियों को राष्ट्र द्वारा सम्मानित कर उन्हें विशिष्ट मान्यता दी जाय। इसमें कोई राशि नहीं दी जाती है। अर्थ से अधिक महत्वपूर्ण पुरस्कार माने गये हैं।

स्पष्ट है कि नेहरू की मनसा साफ थी कि इस क्षेत्र के जो भी व्यक्ति चुने जायेंगे वे आर्थिक दृष्टि से सबल होंगे इसलिए उन्हें आर्थिक लाभ के पैमाने से नहीं तोला जाना चाहिये। इसमें यह भाव तो प्रमुखता से था ही कि ये पुरस्कार राजनीति से सर्वथा दूर रहेंगे। जिन्हें दिये जायेंगे उनके चयन में किसी प्रकार का राजनीतिकरण नहीं होगा। तब ये पुरस्कार विदेश मंत्रालय के अधीन थे जिसके सर्वेसर्वा पं. नेहरू ही थे।

लेकिन बाद में ये विदेश मंत्रालय से हटाकर गृहमंत्रालय के अधीन कर दिये गये। धीरे-धीरे इनके चयन की प्रक्रिया में शिथिलता व्याप्त होती गई और गृहमंत्रालय में ही इसकी जिम्मेदारी के लिए किसी महत्वपूर्ण मुख्य अधिकारी की बजाय निचले दर्जे के अधिकारी को दे दी गई। नतीजा यह हुआ कि इनका अवमूल्यन होने लग गया। सरकार ने अपने लोगों का चयन करना प्रारंभ कर दिया और यह भी देखा गया कि वे सत्ताधारी दल के कितने नजदीक, वफादार और हितचिंतक हैं। इससे इन पुरस्कारों की पूर्व छवि जाती रही और ये शुद्ध राजनीतिकरण की हवा में स्वांस लेने लगे।

इस प्रक्रिया का गिरता हुआ स्तर देख सुप्रीम कोर्ट तक ने इस ओर गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया और चयन समिति बनाने का सुझाव दिया साथ ही यह भी कहा गया कि यह समिति ऐसी हो जिसमें विपक्ष का नेता भी हो।

लेकिन तब भी कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ और स्थिति दिनोंदिन और अधिक निम्नता को प्राप्त करती गई। ऐसे-ऐसे लोगों को पुरस्कृत किया जाने लगा जिनका कोई वजूद नहीं था और न जरा सी भी अपनी विशिष्ट पहचान भी रखते थे।

जो भी हो लेकिन बाद के वर्षों में सरकार द्वारा दिये जाने वाले पद्मश्री पुरस्कार उन लोगों तक भी पहुंचे जिनकी अपने ही क्षेत्र में बमुश्किल पहचान थी। खासकर लोकक्षेत्र के, ग्रामीण अंचलों में वे अपना निवास किये हुए थे। 'पद्मश्री' के लिए उनका चयन उन्हें महत्वपूर्ण तो बना गया किंतु उनकी आर्थिक स्थिति वैसी की वैसी रही। कोई राशि उन्हें नहीं मिलने से न तो उनका स्तर ही बढ़ पाया और न वे पुरस्कृत होने पर कोई शिखर ही पकड़ पाये।

राजस्थान में खड़ताल वादक सिद्दीक ने 'पद्मश्री' प्राप्त करने पर यह वेदना व्यक्त की थी कि सम्मान का यह पत्र मेरे लिए भूंगली ही बना हुआ है। इससे मेरी आजीविका को ठेस ही लगी। पूरे गांव में मैं सम्मानित होने पर अपने को अलग थलग ही महसूस कर रहा हूँ। सम्मानित होने के बाद मैं अपने यजमानों द्वारा ही नहीं बुलाया जा रहा हूँ और न गांव वालों के साथ ही ठीक से घुलमिल पा रहा हूँ। अच्छा होता सरकार प्रतिमाह कुछ पैसा बांध देती तो मैं गर्व और स्वाभिमान की जिंदगी जी पाता।

लगभग यही स्वर बाद के शिल्पियों द्वारा भी व्यक्त किया गया जिन्हें 'पद्मश्री' से नवाजा गया। ऐसी स्थिति में सरकार को यह सोचना है कि वे ऐसे कलाकार तथा शिल्पियों के लिए पद्मश्री से भिन्न कोई विशिष्ट सम्मान पुरस्कार दे या फिर उसके साथ उनकी आर्थिक स्थिति के लिए प्रतिमाह या एक मुश्त उन्हें निश्चित राशि दे ताकि वे सम्मान-पुरस्कार के अनुरूप अपना मान बनाये रख सकें।

अच्छा हो, अब तक जो व्यक्ति सरकार द्वारा पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किये गये उनकी जानकारी भी सुलभ कराई जा सके।

कवि सम्मेलन वह दौर और आज कुछ और

-बालकवि बैरागी-

मैं पिछले करीब 62-63 वर्षों से 'कवि सम्मेलन' जैसी लोकप्रिय शैली से जुड़ा हुआ हूं। इन 60 वर्षों के बदलाव का मैं भी एक साथी और उपांग रहा हूं। आज प्रश्न कविता या साहित्य का नहीं है। आज मूल प्रश्न और मुद्दा है कवि सम्मेलन सफल रहा या नहीं। मेरे शुरू के वर्षों में कविता हमारे सांस्कृतिक परिवेश को शील और संस्कार देने का शास्त्र थी। आज कविता हमारे मनोरंजन का विषय हो गई। मैंने अपने जीवन का सपारिश्रमिक पहिला कवि सम्मेलन ही पं. सूर्यनारायणजी व्यास की अध्यक्षता में पढ़ा था जिसका संचालन किया था डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' जैसे काव्य-ऋषि ने। पूरा संस्मरण और विवरण पचासों पृष्ठ मांगता है। वह कवि सम्मेलन उज्जैन जिले के तरानानगर में वसंतोत्सव के रूप में था। मार्ग व्यय सहित मेरा पारिश्रमिक कुल सात रूपये था और तराना रोड़ स्टेशन से मुझे तराना शहर तक 7 किलोमीटर पैदल जाना पड़ा था। वापसी भी वैसी ही। स्व. हरीश निगम उसके संयोजक थे और 'सुल्तान मामा' नामक भाई ने उस कवि सम्मेलन का ऐलान तांगे में बैठकर अपने शहर में किया था। सुल्तान मामा आज हिंदी, मालवी और कवि सम्मेलनों के लोकप्रिय कवि हैं।

यत्र-तत्र सुनाई पड़ने वाले प्रश्न और बहस के बिंदु आज बहुत बदल गये हैं। लोग चाहते तो मनोरंजन हैं पर प्रश्न करते हैं कि आज कवियों को क्या हो गया। कविता कहां खो गई। साहित्य और कविता का स्तर कहां चला गया। कवि सम्मेलनों की सफलता की सारी कसौटियां बदल गई। एक समय था जब कवि सम्मेलन सारी रात चलते थे। मैंने लालकिले पर सुबह 6.30 बजे तक काव्यपाठ किया। आज हमारी सुनने की समय सीमा कम हो गई है। टी.वी. तक के सामने आधे घंटे से अधिक नहीं बैठ सकते। तब भी हमारे हाथ में या आसपास हमारा फोन होता है जो खुला एवं चालू रहता है। कवि सम्मेलन शहरों के सभागारों में होने लगे जहां श्रोता अधिकाधिक तीन घंटों तक बैठने में भी इधर-उधर देखने लगते हैं।

खुले मैदानों में कवि सम्मेलन जिस तरह आयोजित होते हैं और कवियों का चयन जिस तरह होता है, वह आप मुझसे ज्यादा जानते हैं। पारिश्रमिक का मसला आप कैसे तय करते हैं और कैसे हल करते हैं, यह आप खूब जानते और समझते हैं। कवियों में आप श्रेष्ठता और सर्जना को सामने नहीं रखते। सामने रखी जाती है लोकप्रियता और प्रस्तुति और मंच पर आपके मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि कौन हैं तथा वे आपके लिए कितने उपयोगी हैं; यह देखना जरूरी है। फिर कवि सम्मेलन का प्रसंग और निमित्त क्या है, यह भी एक जरूरी ध्यानाकर्षक तिथि, तारीख या बिंदु है।

कहां से चले, कहां आ गये :

पिछले वर्ष 2014 में एक कवि सम्मेलन का प्रसंग आपको अपनेआप कई बातें एक साथ कह देगा। मुझसे सारी बातें मोबाइल पर हो गई। आपको जरूरी आना है। आपकी श्रेष्ठता हमारी शोभा होगी आदि-आदि। मैं पहुंचा। अच्छी खासी व्यवस्था और भावभीना स्वागत। पूछा तो पता चला कि कवि सम्मेलन यहां के प्रसिद्ध पशु मेले में है। एक समय था जब ऐसे में मैं हक्का-बक्का रह जाता था। अब मुस्करा कर रह जाता हूं। खैर अध्यक्षता कौन करेगा? उत्तर मिला- फलां-फलां सज्जन करेंगे। उनके परिचय में बताया गया कि वे भैंसों के बहुत बड़े व्यापारी हैं। इस कवि सम्मेलन का सारा खर्च ही वे उठा रहे हैं। बहुत साहित्य प्रेमी हैं।

मैंने अपने भीतर बैठे 'बैरागी' से कहा- बोल बेटे बैरागी! तूने अपने कवि सम्मेलनीय जीवन की शुरूआत की थी वसंतोत्सव से। आ गया पशु मेले तक। तुझे पहला अध्यक्ष मिला था अंतर्राष्ट्रीय स्तर का ज्योतिषी और कालिदास जैसे महाकवि का संस्कृत भाष्य करने वाला साहित्य शिरोमणि पं. सूर्यनारायण व्यास और आज मिला है..... यह सोच कर स्वयं के 'सौभाग्य' को समझ ही रहा था कि संयोजक ने प्रश्न किया-दादा शाम को आप क्या लेंगे? प्रश्न के गर्भ को आप खूब समझ गये होंगे।

कैसे कवि, कैसी कविताएं :

आज दो प्रश्न समानान्तर हैं। एक है कवि कैसे हैं? कविताएं कैसी हैं? समानान्तर प्रश्न है श्रोताओं की रूचि कैसी है और उनका मानसिक स्तर कैसा है? आपके श्रोताओं का समूह आपसे चाहता क्या है? वे आपसे कविता चाहते हैं या मनोरंजन? आयोजन की सफलता, असफलता का आपका मापदंड क्या है? आप तालियों की गड़गड़ाहट चाहेंगे कि वाह! वाह!! धन्य! धन्य!! एक बार फिर!! आप ठहाका चाहेंगे कि अपनी आंखों में छलकता आंसू? जो कुछ करना या होना है वह आपको इस युग में अधिकाधिक तीन घंटों में ही करना है। फिर या तो सभागार का मैनेजर आ जायेगा या स्थानीय पुलिस आकर आपका माइक और बिजली बंद करवा देगी।

आपके श्रोता दूर-दूर से आये हैं उन्हें वापस लौटने की जल्दी भी है। आपकी अपनी शर्तें और समस्याएं हैं। आपको या आपकी इस उस संस्था को अथवा समिति को आगे भी कवि सम्मेलन करना है। साहित्य और संस्कृति के नाम पर आप अपने परिवेश को क्या देना चाहते हैं? आपके श्रोता सीटियां बजाकर क्या दर्शाना चाहते हैं? वे सुसभ्य, सुसंस्कारित और विद्या विनीत हैं या आपकी नगर-बस्ती के वे नागरिक जिनके पास बैठना कोई पसंद नहीं करता? पत्रकारों से आपके मेलजोल में कौन-कौन से कोण हैं? कवि सम्मेलन का आर्थिक धरातल क्या है? कवियों की सूची पर उसका कैसा और कितना प्रभाव है? ऐसी कई बातें नई उभर कर सामने आ गई हैं। तब ऐसा नहीं था। अब ऐसा है। संयोजन समितियों के विरोधी उसी शहर में हैं और उनका संकल्प है कि वे आपके इस आयोजन को सफल नहीं होने देंगे। कवि सम्मेलन में श्रोता को आने देने की शर्त क्या है? महिला श्रोताओं को ससम्मान बैठाये रखने की आपकी व्यवस्था कैसी है? चाय, रेवड़ी और मूंगफली बेचने वालों को आप आने देंगे या नहीं? कवियों के काव्यपाठ वाले समय में उनकी एकाग्रता का महत्व आप समझते हैं या नहीं? ये बातें व्यवस्थापकों के ध्यान में शायद ही रहती हों।

श्रुति को जैसे श्रोता वैसी प्रतिश्रुति :

याद रखने वाला समीकरण यह है कि यदि आप संस्कारशील, संस्कृति शोभन और काव्य कसौटी पर खरी उतरने वाली कविता की प्रस्तुति चाहते हैं तो आपको श्रोता भी वैसे ही जुटाने पड़ेंगे। गनीमत है कि बहुत कुछ बदल जाने के बाद भी भारत में कविता की प्यास मरी नहीं है। एक समय बीच में ऐसा भी आया था जब महिलाओं ने कवि सम्मेलनों में जाना बंद कर दिया था। आज हर कवि सम्मेलन में महिलाएं पर्याप्त संख्या में पधारती हैं। यह बदलाव मंच को भी शालीन और संयत रखता है। दूसरी अच्छी बात यह है कि श्रोताओं का एक छोटा बड़ा प्रतिशत कविता की प्रतीक्षा में बैठा रहता है। वह जानता है कि व्यवस्था और श्रोताओं की अनुकूल-प्रतिकूल मानसिकता के बावजूद अब तो कविता होगी, अब तो कविता होगी ही। कविगण भी उन श्रोताओं से रू-ब-रू होने में अपना सौभाग्य मानते हैं। श्रुति को जैसे श्रोता मिलेंगे वैसी प्रतिश्रुति होगी। मेरे इस वाक्य को कृपया रेखांकित कर लीजिए।

जब रसगंगा राजमहलों की सीढ़ियों को लांघती-फलांघती ठेठ नीचे धरती पर आती है जो अपने प्रांजलीय प्रवाह से सीढ़ी, प्रत्येक पेढ़ी और प्रत्येक कण को रसविभोर और रससिक्त करती हुई आती है। जब एक जलधारा ऊपर से नीचे आती है तब सबसे पहले उसकी कौनसी शक्ति कम होती है। जो चीज कम होती है वह होती है उसकी गहराई। हमारी कविता के साथ भी यही हुआ। यह वाल्मीकि से शुरू हुई और आ गई 'बैरागी' तक। हम वेदों से चले और वेदव्यास से आशीर्वाद लेते हुए विवादों तक आ गये। बहस बुरी नहीं है। गलत कुछ भी नहीं है।

शोध नहीं, लोकमत का सर्वेक्षण

-डॉ. पद्युम्न भट्ट-

पिछले दिनों डॉ. पूरन सहगल ने नाथपंथ की स्वीकृति पर शोधपरक काम किया। यद्यपि वे बार-बार कहते रहे कि मैं शोध नहीं कर रहा। यह तो केवल लोकमत का सर्वेक्षण है। उन्होंने पूरा दशपुर जनपद पांव-पांव नाप डाला। लगभग एक सौ नाथों का साक्षात्कार उन्होंने लिया। दस-बारह से भी ज्यादा प्राचीन जागृत एवं सुप्त नाथ धूणियों पर वे गए। वहां लोगों से मिले जहां नाथों, नाथ पंथों और नाथों की धूणियों, आसनों और स्थानों के बारे में मत जाना।

डॉ. पूरन सहगल की शोधविधि अत्यंत सहज होती है। वे कहीं भी बैठ जाते हैं। होटल में, बस में, दस-बारह जनों के जमावड़े में। फिर सहज भाव से चर्चा छेड़ देते हैं। जब चर्चा शुरू हो जाती है, तब वे मौन दर्शक बनकर लोगों के मत सुनते रहते हैं और अंत में 'राम-राम' कहकर उठ जाते हैं। बस से उतर जाते हैं या होटल से चाय का प्याला समाप्त कर बाहर आ जाते हैं।

उन्होंने जितने मठों पर जाकर वहां के नाथों से चर्चा की, तब वे गेरूए वस्त्र पहनकर गए। उनका मानना था कि समान वेशभूषा से आदर और अपनापन दोनों मिलेंगे। भगवा लुंगी, कुर्तानुमा शर्ट और गले में रूद्राक्ष माला तथा कभी-कभी शीश पर पगड़ी। तब वे सचमुच एक सिद्ध योगी लगते हैं। अपनी नाथपंथ की जानकारी से वे नाथों को प्रभावित कर उनसे अनेक उत्तर प्राप्त कर लेते हैं। एकबार नहीं कई बार मुझे उनके साथ रहने का अवसर मिला। भानपुरा अंचल के ताखाजी, हिंगलाजगढ़, संधारा, कंवला, दूधाखेड़ी, धर्मराजेश्वर आदि स्थलों पर मैं उनके साथ रहा। अस्सी वर्ष की उम्र को स्पर्श करती उनकी अथक देह उमंग से जिस प्रकार शोध संलग्न दिखती तब मैं अपनी उम्र को भूलने लगता था।

जब वे नाथों के द्वार पर पहुंचकर 'आदेश' का घोष करते तब भीतर से फौरन नाथजी बाहर आकर करबद्ध प्रतिघोष करते। आदेश आदि पुरूषों का ऐसा लगता था जैसे कोई गौरख किसी भरथरी को चेतनमान कर रहा है। वैशाख-जेठ की चिलचिलाती धूप और आग की लपटों जैसी लू की परवाह किए बगैर यह युवा-वृद्ध अपना काम पूर्ण किए बिना चैन की स्वांस नहीं लेता।

ऐसा ही शोधश्रम उन्होंने पीथल खीची के कड़ावे खोजने में किया था। मालवी लोकसाहित्य में वीर रस की यह अद्भुत गाथा है। उन्हें अनेक देवरों, लोकगायकों और लोकमर्मज्ञों से मिली। यदि किसी ने कहा अमावस वाली चौदस को आना तब वे धैर्यपूर्वक चौदस को पहुंच जाते। वे प्राचीन हवेलियों पर शोध कर रहे थे तब संधारा की भुतही हवेली में निर्भय होकर घुस गए और भीतर जाकर चमगादड़ों-कबूतरों से जूझते रहे। वे कहते, सबसे बड़ा भूत तो मैं स्वयं हूं। मुझसे बड़ा भूत अन्य नहीं हो सकता।

नाथपंथ और उसकी लोकस्वीकृति की पाण्डुलिपि जब वे तैयार करने बैठे, तब बिना विश्राम किए आठ दिन में तैयार कर दी। ऐसे शोध-ऋषि से विद्यार्थी-शोधार्थी हर समय उनका सान्निध्य प्राप्त करते रहते हैं। दूसरों को सम्मान देने में डॉ. पूरन सहगल अत्यंत उत्साहित और उमंगित रहते हैं। मैं वंदित हूं डॉ. पूरन सहगल की शोध-साधना के प्रति।

हरबार बहुत मुश्किल

है कितना अलग अलग
तुम्हारे बारे में सोचना
तुम्हारे बारे में लिखना।
मैं आहूत करती हूँ अक्षर
पर वे सब सारहीन, निरर्थक हैं।
कैनवास पर तुम अभिव्यक्त न हुए
कूची दे गई जवाब हर बार।
कविता में तुम साकार न हुए
सिर्फ़ कागज रंग लिये हर बार।
संगीत भी तुम्हें आकार न दे पाया
स्वर बिखर-बिखर गए हर बार।
अकथ तुम, अव्यक्त तुम
अगाथ तुम, अथाह तुम
अपूर्व, अनुपम, विराट तुम।
तुम को जो अभिव्यक्त करे
ऐसा कोई आयाम नहीं
ढूंढ़ लिए सारे के सारे शब्दकोष
तुम्हारा कोई सार्थक नाम नहीं।
तुम्हारा आभास होता है, जब मैं
सांस लेती हूँ
तुम्हें देख सकती हूँ, जब पलकें
मूंद लेती हूँ।
तुम्हें अनुभूत करना आसान है
और अभिव्यक्त करना मुश्किल।
कितना आसान है तुम्हारे बारे में
सोचना,
कितना कठिन है, तुम्हारे बारे में
लिखना।

-ज्योति शर्मा

शब्द-रंजन प्रकाशन पर शुभकामनाएं

डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा शब्द-रंजन के प्रकाशन पर बधाई। यह पत्र साहित्य और लोककला विशेषज्ञ परिवार की अन्तर्दृष्टि से प्रारंभ हुआ है। निस्संदेह यह अपने प्रांत के लिए विशिष्ट स्थान बना सकेगा और जन समाज की कलात्मक अभिरूचि को सम्वर्धित कर सकेगा। इसमें प्रकाशित रचनाएं सामान्य मानव जीवन से जुड़ी सरल व सहज हों जो पाठकों के हृदय पर गहरा प्रभाव डाल सकें।

-डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर

उदयपुर में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं

कठोर परिश्रम सफलता की कुंजी : दिलीप वेंगसरकर

-मुकेश मुंदड़ा-

उदयपुर। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान दिलीप वेंगसरकर ने उदयपुर में आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता में खिलाडियों की प्रतिभा और जोश की प्रशंसा करते हुए कहा कि उदयपुर में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है जरूरत है तो बस उन्हें ढूंढकर तराशने की। यदि सही अवसर और खेल सुविधाएं मिले तो ये प्रतिभाएं भी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्य का प्रतिनिधित्व कर सकती है।

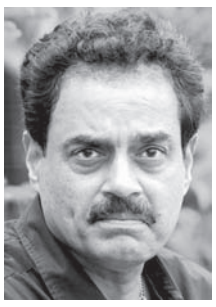

वेंगसरकर ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता हांसिल करने के लिये कठोर परिश्रम आवश्यक हैं। वंडर सीमेन्ट के साथ-7 क्रिकेट महोत्सव के फाइनल में मुख्य अतिथि बनकर आए वेंगी ने भारतीय टीम में अच्छे बॉलर की कमी के चलते खराब प्रदर्शन की बात कहते हुए टीम में रीजर्वप्लेयर और अच्छी बेंचस्टेंञ्थ मौजूद नही होने की बात स्वीकार की। उन्होंने इस बात से साफ इंकार कर दिया कि भारतीय टीम परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं। नये और युवा खिलाड़ियों के लिये उन्होंने एनसीए टीम इंडिया में अच्छी खेल प्रतिभा कोआगे लाने के लिए भारत ए और अंडर 19 टीम को आधार बना सकती है। धोनी की कप्तानी के सवाल पर उन्होंने कहा कि धोनी एक सफलऔर शानदार कप्तान है टीम के एक हिस्से के कमजोर होने पर सफलता हांसिल करना मुश्किल है। खेलो में राजनीति और बीसीसीआई में सुधार के लिए लोढ़ा समिति की रिपोर्ट के बारे में वेंगसरकर ने किसी भी टिप्पणी से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि खेल संघों में वे ही व्यक्ति किसी पद परआए जोअपना पूरा समय खेलो को दे पाएं।

रामविलास उदास है तब से

- डॉ. भगवतीलाल व्यास -

जिन्दगी में तीन चीजें जरूरी होती हैं-
प्रेम, शब्द और रोटी।
जरूरी नहीं होता
सभी की जिन्दगी में चीजों का यही क्रम हो-
रामविलास की जिन्दगी में
यह क्रम इस तरह हो गया
रोटी, शब्द और प्रेम।
रामविलास की जिन्दगी का वह हिस्सा
जिसमें लोग प्रेम का बिरवा रोपते हैं,
उसकी निराई-गुड़ाई करते हैं,
उसमें निकलती नई पत्तियों को निहारते हैं
कहीं कली निकलने का इन्तजार करते हैं
फिर कली के फूल बनने के
उत्सव की तैयारियां करते हैं।
रोटी की तलाश में गुजर गया।
रोटी है ही ऐसी चीज
आदमी सोचता है वह रोटी खा रहा है
मगर हकीकत में रोटी ही आदमी को खा रही होती है।
रामविलास की रोटी की तलाश खत्म हुई तब तक
उसके प्रेम की तलाश का वक्त बहुत पीछे छूट गया था।
अब शब्द बचा था केवल।
राम विलास ने शब्द को मनाने-रिझाने के
लाख जतन किए मगर सब बेकार।
शब्द का राजकुमार मचल गया
वह प्रेम के घोड़े पर बैठ कर ही आता है
मनुष्य की जिन्दगी में।
रामविलास उदास है तब से
क्या रामविलास तीन जरूरी चीजों में से
आखिरी चीज प्रेम को
नहीं पा सकेगा कभी इस भव में।

हाडीरानी की अमरगाथा 'रणदेवी' लोकर्पित

कवि एवं पत्रकार महेश ओझा के खंडकाव्य 'रणदेवी' का 27 जनवरी को भीलवाड़ा में विमोचन हुआ। संस्कार भारती की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में कवि सिद्धार्थ देवल ने अपनी ओजस्वी वाणी से कृति के काव्य पक्ष की समीक्षा करते हुए श्रृंगार, वीर, रौद्र, करुण व वीभत्स रस की पंक्तियों का पाठ किया। कृतिकार महेश ओझा ने भी पुस्तक के विभिन्न अंशों का पाठ किया। इसके बाद हुई काव्य निशा में कवि नरेन्द्र दाधीच, योगेन्द्र शर्मा, प्रहलाद पारीक, जनार्दन जलज, सतीश आचार्य, बालकवि हर्ष, ने काव्यपाठ द्वारा देर रात तक श्रोताओं को बांधे रखा।

शब्द-रंजन की हार्दिक बधाई

उदयपुर में : वैभव (पुत्र दीपक जैन) के साथ छवि नाहर, शब्द-रंजन परिवार के बीच।

उदयपुर में : नितिका (पुत्री सोहन भानावत) के साथ निखिलेश धींग।

जयपुर में : नेहा (पुत्री देवेन्द्र पोखरना) के साथ भवितव्य भादविया।

बड़ीसादड़ी में : प्रज्ञा (पुत्री अमृत कंठालिया) के साथ अंकित करणपुरिया।

डूंगला में : प्रीति (पुत्री मुकुंद दाणी) के साथ रवि कोठारी।

भव्येश सी.ए. बने

मुम्बई में : होनहार छात्र भव्येश (पुत्र राजीव भानावत) द्वारा सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण।

डॉ. रजनी सेवानिवृत्त

प्रसिद्ध कवयित्री एवं समालोचिका डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ सेवानिवृत्त हुईं। वे गोगुन्दा के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रिंसीपल के पद पर कार्यरत थीं।

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. रजनी ने अनेक पुस्तकों का लेखन-संपादन किया। एक संवेदनशील सौम्य एवं विदुषी लेखिका डॉ. रजनी को राष्ट्र, राज्य एवं अकादमिक स्तर पर कई पुरस्कार-सम्मान प्राप्त हुए हैं।

कालबेलिया नृत्यांगना गुलाबो को 'पद्मश्री'

गणतंत्र दिवस पर दिये जाने वाले पद्म पुरस्कारों में इस बार राजस्थान की कालबेलिया नृत्यांगना गुलाबो को 'पद्मश्री' देने की घोषणा की गई।

यह सुखद पक्ष है कि जहां शिक्षा, समाज, विज्ञान, राजनीति, धर्म, अध्यात्म तथा ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में ख्यातलब्ध व्यक्तियों को पद्म पुरस्कारों से नवाजा जाता है वहां लोकजीवन में अत्यंत सादगी तथा सहजतापूर्वक उपलब्धियां अर्जित करने वालों की पहचान कर उन्हें भी पद्मश्री जैसे सम्मान प्रदान किये जाने लगे हैं। लोकक्षेत्र में यह सम्मान प्राप्त करने वालों में अब तब राजस्थान से खड़ताल वादक सिद्दीक, मांडगायिका अल्लाजिलाईबाई, फड़ चित्रकार श्रीलाल जोशी, मोलेला मूर्ति निर्माता मोहनलाल और अब गुलाबो निश्चय ही 'पद्मश्री' के योग्यतम उम्मीदवार रहे हैं।

निहाल अजमेरा लिम्का में दर्ज

भीलवाड़ा में : देश के सर्वाधिक दीर्घजीवी (82) कलाकार के रूप में निहाल अजमेरा ने कलश नर्तक के रूप में लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज कराया।

उदयपुर बर्ड फेयर का समापन

पक्षी विविधता व जलाशय संरक्षण के लिए ठोस प्रयासों पर बल

उदयपुर। उदयपुर में वन विभाग एवं पर्यटन विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित बर्ड फेयर का समापन गत दिनों हुआ। इसमें संभागीय आयुक्त भवानी सिंह देथा मुख्य अतिथि, जिला कलक्टर रोहित गुप्ता एवं बोम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के पूर्व निदेशक डॉ. असद आर रहमानी विशिष्ट अतिथि थे। अध्यक्षता संभागीय मुख्य वन संरक्षक श्री वेंकेटेश शर्मा ने की।

इस अवसर पर उदयपुर एवं इसके आस-पास के पक्षी आवासों एवं पक्षियों के बारे में जानकारी जुटाने वाले पक्षी प्रेमी एवं विशेषज्ञों ने मंथन किया एवं जलाशयों तथा पक्षियों व अन्य जैव विविधता के सरंक्षण हेतु अपने सुझाव प्रस्तुत किए। इन सुझावों को डॉ. छाया भटनागर एवं डॉ. नदीम चिश्ती ने संकलित कर संभागीय आयुक्त एवं जिला कलक्टर के समक्ष प्रस्तुत किया गया । संभागीय आयुक्त देथा एवं अतिथियों ने पक्षी मेले के प्रथम दिन विश्व प्रकृति निधि के सहयोग से आयोजित प्रश्नोत्तरी एवं स्पॉट पेन्टिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्रा देकर सम्मानित किया।

समारोह में संभागीय आयुक्त भवानी सिंह देथा ने कहा कि हमें विरासत में उदयपुर में बहुत कुछ मिला है इसकी सुरक्षा एवं संवर्धन में सभी का योगदान जरूरी है। उन्होंने कहा कि पक्षी विशेषज्ञों के सुझावों अनुरूप जो भी पहल आवश्यक होगी उन पर विचार कर उन पर उचित निर्णय लिया जायेगा ताकि उदयपुर सम्भाग की जैव विविधता ख़ासतौर से पक्षी विविधता के संरक्षण को गति मिल सके।

जिला कलक्टर रोहित गुप्ता ने कहा कि उदयपुर संभाग में जलाशयों एवं पक्षियों के संरक्षण हेतु जो भी कदम उठाने जरूरी होंगे, उन पर अवश्य विचार किया जायेगा। उन्होंने विशेषज्ञों से रण सागर में स्थित टापू के विकास में पारिस्थितिकी की दृष्टि से करणीय कार्यों के बारे में जानकारी ली।

संभागीय मुख्य वन संरक्षक वैंकेटेश शर्मा ने पक्षियों एवं जलाशयों के संरक्षण के लिए सभी संबंधित कारकों को सामने रखकर ठोस निर्णय लेने पर जोर दिया और कहा कि इस दिशा में पूरी दक्षता और व्यवहारिक अनुभवों को ध्यान में रखकर कार्यसंपादन किया जाएगा। आरंभ में मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव, उदयपुर राहुल भटनागर ने अतिथियों का स्वागत किया। सहायक वन संरक्षक डॉ. सतीश कुमार शर्मा ने बर्ड फेयर की तीन दिवसीय गतिविधियों का विस्तृत लेखा जोखा प्रस्तुत किया। अंत में उप वन संरक्षक सुहेल मजबूर ने आभार व्यक्त किया।

'लाइफ़मंत्रास' का पांच हजार स्थानों पर एकसाथ लोकार्पण

उदयपुर। सहारा इंडिया परिवार के मैनेजिंग वर्कर और चेयरमैन सुब्रत रॉय सहारा द्वारा लिखा एक गहन शोध प्रबंधन 'लाइफ़ मंत्रास' का लोकार्पण देश-विदेश में फैले सहारा इंडिया परिवार के 5000 कॉर्पोरेट संस्थापनों में एकसाथ भव्य तरीके से किया गया। 'लाइफ़मंत्रास' उनकी 'चिन्तन तिहाड़ से' पुस्तकत्रयी श्रृंखला की तीन पुस्तकों में से पहली पुस्तक है और देश-विदेश के सभी प्रमुख पुस्तक केंद्रों, सभी प्रमुख ऑनलाइन पोर्टल्स पर तथा ई-बुक के रूप में भी उपलब्ध है। इसी श्रृंखला में आगे आने वाली पुस्तकें हैं, 'थिंक विद मी - हाउ टू मेक अवर कंट्री आइडियल' तथा 'रिफ्लेक्शन फ्रॉम तिहाड़ - ए बुक ऑन तिहाड़ जेल'। इन दोनों पुस्तकों का लोकार्पण भी शीघ्र किया जाएगा। 'लाइफ़ मंत्रास' पुस्तक में सुब्रत रॉय सहारा ने सभी मनुष्यों में निहित मूल प्रवृत्तियों से जुड़े

(शेष पृष्ठ सात पर)

विद्या भवन पॉलिटेक्निक में विशेषज्ञ परिचर्चा

गणित, विज्ञान एवं संवाद कौशल में कमजोरी देश के लिए खतरा

उदयपुर। देश के 80 प्रतिशत इन्जीनियरिंग विद्यार्थी रोजगार-स्वरोजगार के योग्य नहीं है। इसके मूल में विज्ञान एवं गणित विषयों में कमजोरी है। विद्यार्थियों की प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर नींव कमजोर है, वहीं कई तकनीकी संस्थान बिना उचित शिक्षण प्रशिक्षण के डिग्रियां-डिप्लोमा बांट रहे हैं। यह चिन्ता विद्या भवन पॉलिटेक्निक में आयोजित परिचर्चा में विशेषज्ञों ने व्यक्त की। विशेषज्ञों ने कहा कि विज्ञान, गणित में प्रभावी शिक्षण के लिए उद्योग जगत को भी आवश्यक पहल कर सहयोग देना चाहिये। कमजोर जनशक्ति किसी उद्योग की ही नहीं वरन् पूरे देश की उत्पादकता व समृद्धि को बाधित करती है।

परिचर्चा में इन्डियन रबर इन्स्टीट्यूट के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं हेसेट्री, जे.के. टायर के मुख्य निदेशक डॉ. आर. मुख्योपाध्याय एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. समर बन्दोपाध्याय ने कहा कि विज्ञान एवं गणित की मूलभूत समझ केवल इन्जीनियरिंग ही नहीं वरन् जीवन के हर व्यवसाय के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ वैज्ञानिकों, अभियन्ताओं को स्वैच्छिक आधार पर विज्ञान, गणित विषय शिक्षण से जुड़ना चाहिये।

टेक्नो एन.जे.आर. इन्स्टीट्यूट के निदेशक आर.एस.व्यास तथा प्राचार्य डॉ. पंकज पोरवाल ने कहा कि ग्यारहवीं व बारहवीं कक्षाओं में विद्यार्थी स्कूल नहीं जाकर केवल कोचिंग संस्थाओं में तैयारी करते हैं। इनसे कुछ ही प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होते हैं लेकिन प्रयोगशाला में कार्य नहीं करने एवं कोन्सेप्चूअल स्पष्टता के अभाव में वे भविष्य में पिछड़ जाते हैं।

विद्या भवन पॉलिटेक्निक के प्राचार्य डॉ. अनिल मेहता तथा विभागाध्यक्ष प्रकाश सुन्दरम ने कहा कि युवाओं में हिन्दी एवं अंग्रेजी कम्यूनिकेशन स्किल को बढ़ाना जरूरी है। वहीं, इन्जीनियरिंग संस्थानों में पचहत्तर प्रतिशत अनिवार्य उपस्थिति एवं सक्षम फेकल्टी द्वारा सैद्धांतिक व प्रायोगिक कार्य को मजबूती से लागू करना होगा। तभी देश को सही मायनों में तकनीकी जनशक्ति मिलेगी। कार्यक्रम का संयोजन विक्रम कुमावत ने किया।

सन्त पॉल स्कूल में वार्षिक खेल समारोह

उदयपुर। सन्त पॉल सीनियर सैकण्डरी भूपालपुरा में वार्षिक खेल समारोह का रंगारंग समापन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि जिला कलक्टर रोहित गुप्ता व अध्यक्षता ब्रिगेडियर एस.एस. पाटिल ने की। इस अवसर पर बिशप देवप्रसाद गणावा, उदयपुर डायोसिस व बिशप एमीरिटस जोसफपतालिल उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरूआत छात्रों के मार्च पास्ट से हुई। मशाल जलाकर खिलाड़ीयों को शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में कुल 250 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस दौरान 100, 200, 400 मीटर रेस, कक्षा 5 व 6 के विद्यार्थियों द्वारा योग प्रदर्शन तथा 9वीं के छात्रों द्वारा 'एक कदम आतंकवाद मुक्त भारत की ओर' नाटक के माध्यम एक शहीद के परिवार की कहानी को दर्शाया। कार्यक्रम में वुशु मार्शल आर्ट में छात्र-छात्राओं ने अपने साहस और कौशल का प्रदर्शन किया। कक्षा 7वीं व 8वीं की छात्राओं ने राजस्थानी नृत्य की रंगारंग प्रस्तुति दी। कक्षा 11 व 12 के छात्रों ने 'जुम्बा एरोबिक्स का प्रदर्शन किया।

मुख्य अतिथि जिला कलक्टर रोहित गुप्ता ने उदयपुर के स्मार्ट सीटी हेतु चयन होने पर सभी को बधाई दी और सन्त पॉल स्कूल के विद्यार्थियों को लेखन एवं वाचन विद्या में निपुण होकर अपनी शाला का नाम रोशन करने का संदेश दिया। कार्यक्रम अध्यक्ष ब्रिगेडियर एस.एस. पाटिल ने कहा कि जो भी विद्यार्थी एनडीए में रूचि रखता है उसके मार्गदर्शन के लिए उनकी सेना के जवान हमेशा तैयार हैं। विशिष्ट अतिथि बिशप देवप्रसाद गणावा ने स्कूल प्राचार्य एवं शिक्षकों को कार्यक्रम की सफलता पर बधाई दी और विद्यालय में 25 वर्ष पूरे करने पर 5 शिक्षकों व 4 कर्मचारियों को सम्मानित किया। प्राचार्य फादर जॉर्ज वी.जे. ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम में प्रबन्धक फादर मार्सेल डोडियार ने विजेता विद्यार्थियों को पारितोषिक प्रदान किये। शिक्षक बर्नार्ड भूरिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एसएफ सोनिक ने पेश किया जमींदार का डॉक्टर

उदयपुर। भारत के सबसे तेजी से विकसित होते हुए बैटरी मैन्युफैक्चरिंग ब्रांड एसएफ सोनिक ने जमींदार का डॉक्टर कार्यक्रम की घोषणा की है। यह भारत में 25000 किसानों तक पहुंचेगा। पहला जमींदार का डॉक्टर कार्यक्रम जालोर जिले के बागरा में हुआ जहाँ 450 से अधिक ट्रैक्टर उपस्थित थे। जमींदार का डॉक्टर अपनी तरह का अलग कार्यक्रम है, जिसमें किसान अधिकृत एसएफ सोनिक सर्विस पर्सनल के द्वारा अपने ट्रैक्टर का मुफ्त बैटरी चेकअप करा सकते हैं। जब प्रशिक्षित बैटरी मेकेनिक्स उनके ट्रैक्टर की बैटरी जांच रहे होते हैं, तब किसान स्थल पर प्रशिक्षित मेडिकल और हेल्थ प्रोफेशनल्स के द्वारा अपनी मुफ्त मेडिकल जांच करा सकते हैं।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर में 300 रोगियों का उपचार

ऑस्ट्रेलियन चिकित्सकों एवं देशी गुणियों ने दी निःशुल्क सेवा

उदयपुर। जैन सोश्यल मैन उदयपुर व जागरण जन विकास समिति सापेटिया के संयुक्त तत्वाधान में उर्वशी गार्डन शोभागपुरा में दो दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिवर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक शान्तिलाल बम्ब ने बताया कि शिविर में 300 रोगियों का उपचार किया गया। ग्रुप के महामंत्री कमल कोठारी ने बताया कि इस स्वास्थ्य शिविर ने ऑस्ट्रेलियन चिकित्सकों ने मायोथेरेपी द्वारा एवं यहां के देशी प्रशिक्षित चिकित्सकों ने पारम्परिक विधि से चिकित्सा प्रदान की।

आठ ऑस्ट्रेलियन चिकित्सकों द्वारा स्पोण्डालाइसिस, कमर दर्द, स्लिप डिस्क, घुटनों का दर्द, साईटिका आदि का सफल उपचार किया गया वहीं देशी जड़ी-बुटियों के ज्ञाताओं ने दमा, एग्जीमा, मसा, चर्म रोग, निमोनिया, पायरिया, गठिया, मधुमेह का सफल उपचार किया गया। इस मौके पर गुणियों द्वारा निर्मित जड़ी-बुटियों की प्रदर्शनी लगाई गई। ग्रुप अध्यक्ष हरकलाल दुग्गड़ ने बताया कि सभी ऑस्ट्रेलियन चिकित्सकों व गुणियों का प्रतीक चिन्ह द्वारा अभिनन्दन किया गया। ऑस्ट्रेलियन चिकित्सकों में इमली रेड, बारबरा बेडी, ऐलीकर्ड, क्रिस्ट्री, सोहनल, टायला, जैकी, टाइलिया और देशी गुणियों में भगवानलाल, प्रतापीबाई, बद्रीलाल, आनन्द, शांतिलाल, कालू, भवानीसिंह, डॉ. आर. के. देशवाल, सूर्य प्रकाश सालवी, निकिता भाणावत शामिल थे। इस अवसर पर गणेशलाल महता, ख्यालीलाल सिसोदिया, शान्तिलाल मेहता, करणसिंह नलवाया, श्याम सिसोदिया, शंकरलाल सोनी, अरविन्द बड़ाला, श्रीमती लक्ष्मी कोठारी व उर्मिला सिसोदिया सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। आभार शांतिलाल मेहता ने व्यक्त किया।

पीआईएमएस में हाइडेटिस्ट सिस्ट का ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक मरीज के हाइडेटिस्ट सिस्ट का सफल ऑपरेशन किया।

पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि शिवपुरा, मनासा (एम.पी.) निवासी साबूबाई (55) पत्नी केशुराम बंजारा को 15 दिनों से आंतों में रूकावट को लेकर परेशानी हो रही थी। आतों में रूकावट के चलते मरीज का पेट फूला हुआ था और उसे खाना खाने में दिक्कत हो रही थी। इस पर परिजन उसे लेकर पीआईएमएस आए। यहां साबूबाई के खून की जांच और सोनोग्राफी कराई गई जिसमें मरीज के पेट में बहुसंख्या में हाइडेटिस्ट सिस्ट का पता चला। इसका इलाज ऑपरेशन से ही संभव होने पर डॉ. एम.एम. मंगल, डॉ. राजेश, डॉ. ए.एस. चूण्डावत, हेमराज, सुधांशु एवं नवीन की टीम द्वारा पेट में 20 हाइडेटिस्ट सिस्ट निकले गए और आंतों में रूकावट थी इस पर इंस्टेटाइनल ऑफ्टेकल का ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन के बाद मरीज स्वस्थ है।

पीआईएमएस में कैंसर की गांठ का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने कैंसर की गांठ का सफल ऑपरेशन किया।

पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि वल्लभनगर के धमानिया गांव निवासी पिचहत्तर वर्षीय हुक्मीचंद के गुर्दे में पिछले कई दिनों से परेशानी हो रही थी। गत दिनों परिजन उसे लेकर पीआईएमएस पहुंचे। जांचों के बाद पता चला कि मरीज के दायें गुर्दे में कैंसर की गांठ है। इस पर डीन डॉ. ए.पी. गुप्ता के निर्देशानुसार डॉ. एम. एम. मंगल, डॉ. ए. एस. चूण्डावत एवं टीम द्वारा ऑपरेशन कर मरीज के गुर्दे से कैंसर की गांठ निकाली गई। ऑपरेशन के बाद मरीज पूर्णत: स्वस्थ है।

पीड़ित हुक्मीचंद ने बताया कि विगत एक माह से मैं असहय पीड़ा से भारी पेरशान था। कई जगह मुझे ले जाया गया किंतु कहीं भी बीमारी की ठीक से पकड़ नहीं हो पाई। पैसे का अभाव भी एक बड़ा कारण रहा। तब किसी ने मुझे उमरड़ा के अस्पताल में जाने का सुझाव दिया और कहा कि वहां न केवल शर्तिया इलाज होगा बल्कि सारी जांचें, देखभाल, दवाई और ऑपरेशन तक मुफ्त में हो जायेगा। महीने भर इधर-उधर डोलते रहे हो तो एक बार उमरड़ा जाकर देखो। भगवान ने चाहा तो तुम वहां जाकर नया जीवन पा लोगे। यह सुन मुझे मेरे घरवाले उमरड़ा ले गए जहां वहां के कर्ताधर्ता आशीषजी ने बड़े संतोष से मुझे अच्छा इलाज करने का भरोसा दिलाया और बड़े डॉक्टरों द्वारा मुफ्त में मेरी सारी जांचे की गई और यहां तक कि बिना एक भी पैसा लिए इतना बड़ा ऑपरेशन कर मुझे मौत के मुंह से बाहर निकाला। अब मैं पूरी तरह ठीक हूं। मुझे लगा कि मेरे लिए भगवान ने ही इन भाग्यवान डॉक्टरों से मिलाया और मुझे चंगा किया।

एमएसजी क्लब बीकानेर ने जीती वंडर सीमेंट ट्रॉफी

कड़े मुकाबले में वल्लभनगर को 4 विकेट से हराया, विजेता टीम को 3.50 लाख का नकद पुरस्कार

उदयपुर। वंडर सीमेंट साथ : 7 क्रिकेट महोत्सव के पहले संस्करण का गत दिनों सफलतापूर्वक समापन हुआ। दिल्ली पब्लिक स्कूल ग्रांउड पर खेला गया फाइनल मैच एमएसजी क्लब बीकानेर एवं प्रधान क्लब उदयपुर के बीच हुआ जिसमें एमएसजी क्लब ने 4 विकेट से विजयी रहा। टूर्नामेंट का आयोजन वंडर सीमेंट द्वारा किया गया। सात ओवर के इस मैच में प्रधान क्लब उदयपुर ने पहले खेलते हुए 5 विकेट के नुकसान पर 78 रन बनाये। विरोधी एमएसजी क्लब ने 6.2 ओवर में 2 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। एमएसजी क्लब के उपकप्तान नरेन्द्र वीरदी को बेहतरीन प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। जिन्होंने 27

रन बनाए एवं दो विकेट चटकाए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया और भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और मुख्य चयनकर्ता दिलीप वेंगसरकर ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि मैं वंडर सीमेंट को इतना बड़ा टूर्नामेंट आयोजित करने के लिए दिल से बधाई देता हूं। इस टूर्नामेंट से न सिर्फ राज्य की प्रतिभाओं को पहचानने में मदद मिली, बल्कि मानसिक सुकून, भाईचारा और सम्मान भी विकसित हुआ। दिलीप वेंगसरकर ने कहा कि मैं शानदार टूर्नामेंट आयोजित करने के लिए वंडर सीमेंट के प्रयासों की प्रशंसा करता हूं। इस तरह के टूर्नामेंट्स भारत के जमीनी स्तर से क्रिकेट की नई प्रतिभाओं एवं सितारों को चिन्हित करने में मदद करते हैं।

वंडर सीमेंट के निदेशक विवेक पाटनी ने कहा कि इस टूर्नामेंट ने 248 स्थानों, 33 जिलों और 9894 गांवों तक पहुंच बनाई। एमएसजी क्लब बीकानेर को 3,50,000 रूपये की ईनामी राशि दी गई, जबकि हारने वाली टीम प्रधान क्लब वल्लभनगर को 1,40,000 रूपये प्रदान किये गये। इस टूर्नामेंट के उद्घाटन संस्करण में विभिन्न स्तरों पर विजेताओं के लिए कुल पुरस्कार राशि 30 लाख रूपये थी। टूर्नामेंट में जयपुर टीम के विकास को सीरिज में 444 रन बनाने पर बेस्ट बेट्स्मेन, जयपुर के कमाल को 29 विकेट लेने पर बेस्ट बॉलर, बीकानेर टीम के जसपाल सिंह को बेस्ट फील्डर, जयपुर की महिला टीम की वंदना को बेस्ट गर्ल प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट, बीकानेर टीम के सुखविन्दर सिंह को मैन आफ द सीरिज का खिताब दिया गया।

रजनीगंधा अचीवर्स ने जीता वोडाफ़ोन सिरमूर कप का फाइनल

उदयपुर। वोडाफ़ोन सिरमूर कप 2016 का फाइनल मैच रजनीगंधा अचीवर्स और गरचा होटल्स के बीच खेला गया जिसमें रजनीगंधा अचावर्स सिरमूर कप 2016 का विजेता बना। विजेता टीम को ट्रोफी वोडाफोन इंडिया के एमडी और सीईओ सुनील सूद और राजमाता पद्मीनी देवी द्वारा दी गई। इस अवसर पर वोडाफोन इंडिया के सीओओ नवीन चोपड़ा, ऑपरेशन्स डायरेक्टर पश्चिम बी. पी. सिंह और राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाया।

इस साल के वोडाफ़ोन सिरमूर कप 2016 में 6 टीमों ने हिस्सा लिया। सभी टीमों ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। पाँच चक्कर के इस फाइनल मैच में, रजनीगंधा

अचीवर्स पहले चक्कर से ही सामने वाली टीम पर हावी रहा। गरचा होटल्स के मनोलो शानदार खेल खेलते हुए एक तिकड़ी लगाई लेकिन अपनी टीम को जीत दिलाने में असफल रहे। वहीं दूसरी ओर विजयी टीम के सिमरन शेरगिल को बेस्ट प्लेयर ऑफ टूर्नामेंट के अवार्ड से नवाजा गया। वोडाफ़ोन इंडिया के एमडी एण्ड सीईओ, सुनील सूद ने कहा कि वोडाफ़ोन की भारतीय खेलों के प्रोत्साहन में सक्रिय भूमिका रही है। वोडाफ़ोन सिरमूर कप हमारा पुराना और सही अर्थों में गौरव का अहसास कराने वाला भव्य और राजसी आयोजन है। यह आयोजन देश में पोलो को बढ़ावा देने की दिशा में हमारे प्रयास का एक हिस्सा है। राजस्थान बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि इस आयोजन को सफल बनाने के लिए में सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों और दर्शकों के सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद देता हूं।

कोलगेट देगा 1 लाख तक की स्कॉलरशिप

उदयपुर। ओरल केयर में मार्केट लीडर कोलगेट पॉमोलिव (इंडिया) लि. ने अपने नेशनल स्कॉलरशिप अभियान के प्रारंभ की घोषणा की है जिसमें 1 लाख रु. तक की स्कॉलरशिप जीतने का मौका मिलेगा और यह अभियान 29 फरवरी तक उपलब्ध रहेगा। यह उन बच्चों को एक नेशनल प्लेटफॉर्म देने का प्रयास है, जो अपने जीवन में बदलाव लाना चाहते हैं। इस वर्ष स्कॉलरशिप का लक्ष्य देशभर में 200 से अधिक स्कॉलरशिप्स प्रदान करना है।

कोलगेट-पॉमोलिव (इंडिया) लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर इसाम बचलानी ने कहा कोलगेट बच्चों की कल्पनाओं के महत्व को समझता है एवं जानता है कि एक अच्छी शिक्षा किस प्रकार उनका भविष्य बेहतर बना सकती है। स्कॉलरशिप ऑफर उनकी शिक्षा पूरी करने में काफी मददगार साबित होगा, जैसे इससे वो कक्षा में नामांकन करा सकेंगे, बेहतर स्कूल में पढ़ सकेंगे, किताबें एवं स्टेशनरी आदि खरीद सकेंगे। कोलगेट स्कॉलरशिप ऑफर इस अभियान आज तक 1200 से अधिक परिवारों को बेहतर शिक्षा और बेहतर भविष्य के अवसर उपलब्ध कराए हैं।

कोलगेट स्कॉलरशिप ऑफर में भाग लेने के लिए कोलगेट स्ट्राँग टीथ टूथपेस्ट के पैक पर दिए गए टोल फ्री नंबर पर एक मिस कॉल देनी होगी। प्रतिभागियों को स्कॉलरशिप जीतने का मौका पाने के लिए ओरल केयर पर एक आसान से सवाल का जवाब देना होगा। स्कॉलरशिप ऑफर की नियम व शर्तें डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट कोलगेट डॉट को डॉट इन पर उपलब्ध हैं। (इसके लिए पैक खरीदा जाना जरूरी नहीं है।

महिलाएं प्रेम तो पुरुष करियर व वित्त को लेकर चिंतित

उदयपुर। भारत के अग्रणी ज्योतिषीय पोर्टल गणेशास्पीक्स डॉट कॉम ने वार्षिक ज्योतिषीय चलन अध्ययन रिपोर्ट रिलीज की। वर्ष 2015 के दौरान महिलाओं की प्राथमिकता के तौर पर सहानुभूति और प्रेम इच्छाएं उभरकर सामने आई हैं। वर्ष 2015 के दौरान पूरे भारत से गणेशास्पीक्स डॉट कॉम के कॉल सेंटर को जो कॉल्स रिसीव हुई, उनमें 90 प्रतिशत कॉल्स लव एवं रिलेशनशिप को लेकर थीं। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इसमें महिला कॉलर का योगदान पुरुषों की तुलना में अधिक था। अध्ययन के मुताबिक कुल कॉल्स का 29 प्रतिशत हिस्सा प्रेम एवं विवाह संबंधित मामलों में ज्योतिषीय सलाह लेने के लिए आई कॉल्स ने रोका, जो अन्य मामलों के संदर्भ में लिए ज्योतिषीय मार्गदर्शन से अधिक हैं।

इसके अलावा, पोर्टल ने अपनी ज्योतिषीय हेल्पलाइन सेवा नंबर 55181 पर आने वाली कॉल्स का अध्ययन किया तो पाया कि 80 प्रतिशत कॉल्स महिला जातकों की तरफ से की गई थी। इसके अलावा 68 प्रतिशत कॉल्स करियर एवं व्यक्तिगत संबंधों से जुड़े संदेह से जुड़ी हुई थीं। इसके अलावा, लोकप्रिय ज्योतिष पोर्टल के आंकड़े बताते हैं कि महिलाओं ने ज्योतिषीय मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए गणेशास्पीक्स डॉट कॉम का बड़े स्तर पर इस्तेमाल किया है। पुरूषों के मुकाबले महिलाओं ने दोगुनी प्रीमियम रिपोर्टें खरीदी।

'लाइफमंत्रास'....

(पृष्ठ छह का शेष)

मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक पहलुओं का इतने सुंदर और विस्तृत ढंग से वर्णन किया है कि सर्वशक्तिमान द्वारा मनुष्य को प्रदत्त जीवन के नैसर्गिक सौंदर्य के इस दिव्य रहस्य से हम भलीभांति अवगत हो सकें। वह अपने प्राक्कथन में लिखते हैं- "इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद निश्चित रूप से पूरे विश्वास के साथ महसूस करेंगे कि जीवन में शांति, सच्चा सुख, प्रसन्नता, आत्मसंतोष और संतुष्टि पाने तथा भौतिक उपलब्धियों, सम्मान और प्यार के मामले में निरंतर प्रगतिशील बने रहने के लिए भी आपको इस दुनिया में किसी अन्य पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है।

अशोक लिलैंड द्वारा आधुनिकतम कैप्टेन 40आईटी ट्रैक्टर लॉन्च

उदयपुर। हिंदुजा समूह की फ्लैगशिप और देश के सबसे बड़े वाणिज्यिक वाहन निर्माताओं में से एक, अशोक लिलैंड ने आज अपने लोकप्रिय कैप्टेन सीरीज के ट्रक्स का पहला कैप्टेन 40 आईटी ट्रैक्टर को राष्ट्रीय स्तर पर लॉन्च किया है।

राजीव सहारिया, प्रेसिडेंट - ट्रक्स, अशोक लिलैंड ने कहा कि नया कैप्टेन 40 आईटी विशेष तौर पर भारतीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। इसकी 2.3 मिलियन किलोमीटर से अधिक की रोड टेस्टिंग की गई है और पेव ट्रैक व 6 पोस्टर्स पर व्यापक रूप से आंतरिक टेस्टिंग की गई है। कैप्टेन ट्रैक्टर्स की यह नई श्रृंखला 40टी/49टी रेंज में विश्वस्तरीय कैब व खोजपरक माइलेज वाला नया ड्राइव ट्रेन उपलब्ध कराती है। इसमें इंटेलिजेंट इंजिन प्रबंधन प्रणाली है, ड्युअल डेटा स्विच है, जो खाली और भरे होने पर बस स्विच दबा देने भर से श्रेष्ठतम ईंधन खपत सुनिश्चित करता है। नये कैप्टेन 40आईटी में बेहतर पिक-अप, मरम्मत करने में आसानी, और इंडस्ट्री में सर्वोच्च कैब टिल्ट ऐंगल जैसी खूबियां हैं। श्री राजीव सहारिया ने कहा कि कैप्टेन 40आईटी से उसी आराम, विश्वसनीयता, कुशलता और बहुपयोगिता की झलक मिलती है, जिसके लिए कैप्टेन सीरीज के ट्रक्स को जाना जाता है। इन खूबियों के साथ, मुझे भरोसा है कि नया कैप्टेन 40आईटी हमारे ग्राहकों के व्यवसाय की उत्पादकता को बढ़ा देगा और उनकी आय में वृद्धि करेगा।

एचपी इंक ने की वायरलेस डेस्कजेट प्रिंटर्स की पेशकश

उदयपुर। एचपी इंक ने आज नये वायरलेस एचपी डेस्कजेट इंक एडवांटेज प्रिंटर्स की पेशकश की है। एचपी इंक के कंट्री कैटेगरी लीडर प्रिंटिंग सिस्टम्स पारिकशेतसिंह तोमर ने बताया कि माता-पिता को हमेशा उस समय मुसीबत का सामना करना पड़ता है जब उनके बच्चे देर रात अपना होमवर्क प्रिंट कराने के लिए कहते हैं। नये वायरलेस एचपी डेस्कजेट इंक एडवांटेज प्रिंटर्स किफायती, उच्च गुणवत्तापूर्ण प्रिंटिंग की सहूलियत को घर लेकर आये हैं। इससे माता-पिता आसानी से अपनी मोबाइल डिवाइस से इन्हें जोड़ सकते हैं और बेहतरीन क्वालिटी में अपने बच्चों के असाइनमेंट को प्रिंट कर सकते हैं। माता-पिता ओरिजनल एचपी इंक एडवांटेज काट्रिजेस के साथ प्रिंटिंग की लागत में भी बचत कर सकते हैं।

भारत का पहला डायबिटीज केयर ऑयल - फॉर्च्युन वीवो लॉन्च

उदयपुर। खाद्य तेल के प्रमुख निर्माता एवं विक्रेता, और प्रमुख भारतीय समूह अदाणी समूह व सिंगापुर के विल्मर इंटरनेशनल लि. के संयुक्त उद्यम, अदाणी विल्मर लि. (एडब्ल्यूएल) ने फॉर्च्युन वीवो के नाम से भारत का पहला डायबिटीज केयर ऑयल लॉन्च किया। इसे अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा ने लॉन्च किया। इस अवसर पर एडब्ल्यूएल के साथ मिलकर संयुक्त रूप से इस उत्पाद को तैयार करने वाले भारतीय मूल के वैज्ञानिक डॉ. शंकर देवराजन व अन्य प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे।

अदाणी विल्मर लि. के कंपनी प्रवक्ता अतुल चतुर्वेदी (सीईओ) ने कहा कि फॉर्च्युन अदाणी विल्मर का नं.1 फ्लैगशिप ब्रांड है। यह धीरे-धीरे मजबूत हुआ है और भारतीय परिवारों को 'भोजन की खुशी' प्रदान करता रहा है। फॉर्च्युन के पास भारत में कूकिंग ऑयल्स की सबसे बड़ी रेंज है और यह समय-समय पर नये उत्पादों को उतारकर कूकिंग ऑयल इंडस्ट्री में नवाचार लाता रहा है।

अदाणी विल्मर लि. के अंग्शु मल्लिक (सीओओ) ने कहा कि शोधों से संकेत मिलता है, फॉर्च्युन वीवो खाना पकाने के लिए एक प्रभावी तेल है, जो टाईप 2 डायबिटीज को नियंत्रित करने में मदद करता है और रक्त शर्करा के स्तर को बनाये रखता है। वीवो एक विशेष प्रकार का तेल है, जिसमें असंतृप्त वसा भरपूर मात्रा में होता है। फॉर्च्युन वीवो डायबिटीज केयर ऑयल भारत का एक अनूठा उत्पाद है, चूंकि हमारा देश डायबिटीज की वैश्विक राजधानी है। यह ऑयल न केवल डायबिटीज के मरीजों के लिए सहायक होगा बल्कि इससे पूरा परिवार लाभान्वित होगा।

मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन योजना का जिला स्तरीय समारोह जाबला में सम्पन्न

उदयपुर। जिले के प्रभारी एवं गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान को ग्राम्य विकास का महा अभियान बताया और इसमें बढ़चढ़ कर हर तरह से भागीदारी निभाने का आह्वान ग्रामीणों से किया है। प्रभारी मंत्री कटारिया उदयपुर जिले की गिर्वा पंचायत समिति के जाबला गांव में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के जिला स्तरीय शुभारंभ समारोह में मुख्य अतिथि पद से संबोधित कर रहे थे।

समारोह में उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, मेलड़ी माता के महंत एवं जाने-माने संत वीरमदेव महाराज, प्रभारी शासन सचिव रविशंकर श्रीवास्तव, जिला कलक्टर रोहित गुप्ता, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अविचल चतुर्वेदी, गिर्वा पंचायत समिति के प्रधान तखतसिंह शक्तावत, समाजसेवी मुकेश दाधीच, डॉ.जिनेन्द्र शास्त्री, उपखण्ड अधिकारी नम्रता वृष्णि, विकास अधिकारी अजय कुमार आर्य सहित ग्रामीण जनप्रतिनिधिगण, अधिकारी, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण स्त्री-पुरुष उपस्थित थे।

3-डी मॉडल का विमोचन

इस अवसर पर गृहमंत्री कटारिया ने गिर्वा पंचायत समिति की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के 3-डी मॉडल का विमोचन किया और अभियान की गतिविधियों के बारे में जानकारी ली।

गृहमंत्री कटारिया ने मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान को आशातीत सफलता प्रदान करने के लिए पूरी सहभागिता अदा करने की अपील करते हुए ग्रामीणों से कहा कि यह कार्य हर हाल में जून तक पूर्ण हो जाए ताकि बरसात में इनका पूरा उपयोग सामने आ सके। इससे गांव का पानी गांवों में ही रुकेगा तथा ग्रामीणों के साथ ही मवेशियों के लिए भी काम में आ सकेगा। श्री कटारिया ने कहा कि वे सब्जी उत्पादन, गौपालन, डेयरी, आम व महुआ, वृक्षारोपण आदि को अपनाएं। इसके साथ ही उन्होंने पानी का मितव्यता से उपयोग करने पर जोर दिया। गृहमंत्री ने मेलड़ी माता मन्दिर के महन्त वीरमदेव महाराज से मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान में भागीदारी के लिए भक्तों को प्रेरित करने का आग्रह किया।

गृहमंत्री ने बताया कि पं. दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना में उदयपुर जिले को 190 करोड़ मिले हैं जिससे ग्राम्यांचलों में झोंपड़ियों और टापरों तक लट्टू लगाकर रोशनी पहुंचाई जाएगी और जहां जरूरी होगा वहां सौर ऊर्जा से रोशनी पहुंचायी जाएगी। इससे ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने की सुविधा मिलेगी। गृहमंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन योजना में जन प्रतिनिधियों की ओर से भी 10-10 लाख रुपए का योगदान दिया जाएगा वहीं जहां कहीं धन की कमी आएगी वहां दानदाताओं को जोड़कर पूरी करेंगे। प्रभारी मंत्री ने भामाशाह कार्ड के फायदे बताए और कहा कि भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना में मरीजों के ईलाज के लिए 30 हजार से लेकर 3 लाख तक के ईलाज का खर्च सरकार की ओर से दिए जाने का प्रावधान है।

ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने अभियान को गांवों की बुनियादी समस्या से मुक्त कराने की अपूर्व पहल बताया और कहा कि इससे ग्रामीण जन-जीवन को सुकून प्राप्त होगा। जिला कलक्टर रोहित गुप्ता ने बरसाती पानी रोकने की मुहिम में हर संभव सहभागिता निभाने की अपील ग्रामीणों से की और बताया कि उदयपुर जिले में इस अभियान के प्रथम चरण में 246 गांवों में जल संरक्षण गतिविधियां संचालित होंगी और इन गांवों को पानी के मामले में आत्मनिर्भर बनाया जायेगा। आरंभ में स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अविचल चतुर्वेदी ने मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। संचालन वगतलाल शर्मा ने किया।

कान्यो मान्यो की मोबाइल फूसी

कान्यो मान्यो नामक दो मित्रों की मोबाइल फूसी इन दिनों चना जोर गरम पर है। कान्या बोला– 'मान्या तू मान, भले मत मान पर इन दिनों बिना भविष्यवाणी का भूकंप ऐसा आया जिसने कइयों को झकझोर दिया।' मान्या ने जवाब दिया– 'सच है कान्या ; जो असहिष्णु हो गए हैं, वे पहले किसी अन्य पाले के थे। अब पाला बदल गया तो लगा उन पर पाला गिर गया है।'

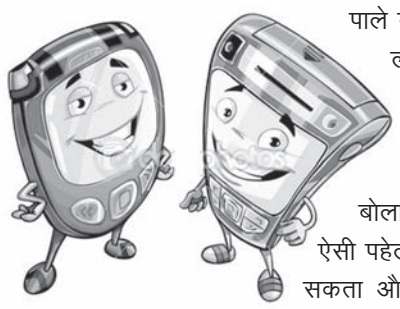

'यह पाला वाला क्या होता है, मेरी समझ में नहीं आया, ठीक से समझाव यार।' कान्या बोला। मान्या ने समझाइश दी– 'यह ऐसी पहेली है जिसे हर कोई नहीं समझ सकता और समझने की आवश्यकता भी क्या है। समझने समझाने वालों का पूरा सम्प्रदाय है। वे जुगाड़ू तथा कबाड़ू किस्म के होते हैं। उन्हें हर कोई नहीं समझ सकता। यों बावजी चतुरसिंहजी ने भी लिखा–

बकरी चरगी नार ने, पालो पाती जांण।
वी बकरी रो ग्वाल है, उदिया अलख पिछांण।।

इसका अर्थ कौन जान पाया है। उनके पास रहा उनका सेवादार उदिया भी नहीं बता सका। कैसे बतायेगा। बावजी अध्यात्म के मोटे पुरस थे।' कान्या ने कुरते कहा, 'उद्या पढ़ा लिखा नहीं था सो बावजी ने अलख यानी बिना लिखे को पिछांणने, पहचानने को कहा। उदिया उसे भी नहीं जान पाया।'

मान्या ने दहला ठोकी ; 'एक हाथ में जिनके लड्डू आ गया, उनका दूसरा हाथ खाली है। दोनों में लड्डू आयेगा तो वे सहिष्णु बनेंगे। भारी पेटा तब ही आता है जब तराजू के दोनों पलड़े भारी हों। तू देखा कर कान्या। सारी समझदारी की बातें रात को होती हैं। सुबह कुछ दूसरा ही आनंद का बाज मिलेगा।'

यह सुनते ही कान्या का दिमाग ठिठक, कुछ दूसरे सोच में चला गया। उसे याद आई एक जोड़ू कवि की ये पंक्तियां-

एक रात में लिखी पोथियां, छपी दूसरी रात ललाम।
हुई पुरस्कृत रात तीसरी, जै रघुनंदन जै सीया राम।।

सो प्यारे लाल, गोटी फिट हो जाने पर लंगोटी की बखत भी जाती रहती है। असहिष्णु जिन्होंने कहा, वे धीरे-धीरे सहिष्णुतापूर्वक अवतरित होकर आपसे कहेंगे, 'मैं तो मजाक कर रहा था।'

ऊंट की करवट खुद यह नहीं जान पाती है कि वह कब कैसे किस करवट बैठ जाय। शोक मग्न अशोक हो जाय तो दंदफंद आनंद मनाने लगे। गधे को खाने को चाहिये फिर उसकी पीठ पर शेर की खाल डालो, चाहे मैला भरी गुणती।

हिन्दुस्तान ज़िंक का मुनाफा 24 फीसदी घटा

तीसरी तिमाही के वित्तीय परिणाम घोषित

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड ने 31 दिसम्बर 2015 को समाप्त तीसरी तिमाही एवं नौमाही के वित्तीय परिणामों की घोषणा की। लन्दन मेटल एक्सचेंज में जस्ता-सीसा धातु की कीमतों में निरन्तर गिरावट के कारण गतवर्ष की इसी समान अवधि की तुलना में हिन्दुस्तान ज़िंक का लाभ घटा व इसमें 24 प्रतिषत की कमी के बाद कंपनी को 1811 करोड़ रुपये का लाभ हुआ।

हिन्दुस्तान ज़िंक के चेयरमैन अग्निवेष अग्रवाल ने बताया कि जस्ता की निरन्तर गिरती कीमतों की वजह से लाभ में गिरवाट आई है। हिन्दुस्तान ज़िंक अपने खर्चों में कमी लाने का भरसक प्रयास कर रहा है ताकि प्रचालनों को सुचारू रूप से चलाया जा सकें। परन्तु हमें खुशी हैं कि हम रिफाइन्ड धातु व चांदी के उत्पादन में बढ़ोतरी कर सकें। वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही में कम्पनी ने 228,082 एम.टन खनित धातु का उत्पादन किया जो गत वर्ष की इसी समान अवधि में 242,416 एम.टन था जो कि गतवर्ष की इसी समान अवधि की तुलना में कमी दर्शाता है। तीसरी तिमाही में कंपनी के खनित धातु के उत्पादन में गिरावट सिन्देसर खुर्द एवं कायड़ खदान में खनन उत्पादन में कमी के कारण आई है। परन्तु नौमाही में खनिज धातु का उत्पादन 700,458 एम.टी. हुआ जो पिछले वर्ष की इसी समान अवधि की तुलना में 13 प्रतिषत की वृद्धि दर्शाता है। वित्तीय वर्ष 2016 की तीसरी तिमाही के दौरान कंपनी को 3,385 करोड़ रु. का राजस्व हुआ जो पिछले वर्ष की तुलना में 11 प्रतिशत की कमी दिखाता है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल- 9414165391 ● टाईटल रजि. RAJHIN 17670 ● Email : shabdranjanudr@gmail.com ● सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।